पाठ - 9

चन्द्रगुप्त मौर्य

उस समय यूनानी सम्राट सिकन्दर अपनी विजय-पताका फहराकर भारत से लौट चुका था। सिन्ध, पंजाब तथा सीमा प्रदेश का शासन उसने अपने यूनानी अधिकारियों के हाथ में दे रखा था। विदेशी अधिकारियों का शासन अत्याचारपूर्ण था। प्रजा अत्यंत दःुखी और असन्तुष्ट थी। सिकन्दर के आक्रमण का विरोध करने में भारतवासी सफल भले ही न हो सके थे लेकिन उनके मन में अपने देश को स्वतंत्र कराने की इच्छा बराबर बनी रहती थी। यूनानी अधिकारियों के अत्याचार से विरोध की यह आग और भी भड़क उठी। उनको आवश्यकता थी तो केवल एक ऐसे नायक की, जो इन्हें दिशा निर्देश दे सके और उनका पथ प्रदर्शक बन सके। संयोगवश चन्द्रगुप्त मौर्य जैसे साहसी और महत्त्वाकांक्षी युवक का इन्हें नेतृत्व मिल गया।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने भारत भूमि की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वालों को संगठित कर एक सेना का निर्माण किया। सेना की सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य ने यूनानियों को भारत भूमि से बाहर निकाल दिया और अपनी राजसत्ता स्थापित की। इस विजय से चन्द्रगुप्त मौर्य में विश्वास और उत्साह का जन्म हुआ। फलस्वरूप उसने एक विशाल सेना संगठित की और मगध साम्राज्य पर आक्रमण कर दिया। युद्ध में चन्द्रगुप्त मौर्य को विजय प्राप्त हुई। मगध का शासक नन्दराजा घनानन्द युद्ध मंे मारा गया और चन्द्रगुप्त मौर्य मगध की राजधानी पाटलिपुत्र के सिंहासन पर बैठे।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने उत्तर भारत पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के पश्चात् यह अनुभव किया कि सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में बाँधने के लिए दक्षिण भारत पर भी विजय प्राप्त करना आवश्यक है। धीरे-धीरे बंगाल तथा मालवा आदि पर चन्द्रगुप्त ने अपना अधिकार कर लिया। चन्द्रगुप्त मौर्य का अन्तिम संघर्ष सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस के साथ हुआ। यूनानी और भारतीय सेना में घमासान युद्ध हुआ जिसमें चन्द्रगुप्त की विजय हुई। अपनी

पराजय मानकर सेल्यूकस को चन्द्रगुप्त से सन्धि करनी पड़ी। सन्धि को सुदृढ़ बनाने के लिए सेल्यूकस ने अपनी पुत्री का विवाह भी चन्द्रगुप्त मौर्य से कर दिया और मेगस्थनीज नामक एक राजदूत भी चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा। चन्द्रगुप्त ने भी सेल्यूकस को 500 हाथी उपहार स्वरूप दिए। इस प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य पश्चिम में मध्य एशिया से पूर्व मंे बंगाल तक और उत्तर में हिमालय पर्वत से दक्षिण में कृष्णा नदी तक फैल गया। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने बाहुबल और अदम्य साहस से भारत में राजनीतिक एकता स्थापित की।

जैन जनश्रुति के अनुसार चन्द्रगुप्त एक ऐसे गाँव के प्रधान की कन्या के पुत्र थे जहाँ मयूर-पोषक निवास करते थे। इस कारण उनका वंश 'मौर्य वंश' कहलाया। बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार नेपाल की तराई में पिप्पलिवन नामक एक स्थान था। यहाँ क्षत्रिय जाति के लोग निवास करते थे, इन्हें ''मौरिय'' कहा जाता था। चन्द्रगुप्त के पिता इसी जाति के प्रधान थे, जिनकी किसी शक्तिशाली राजा द्वारा हत्या कर दी गयी थी। अपने पुत्र को सुरक्षित रखने के लिए इसकी माता अपने सम्बन्धियों के साथ कहीं अन्यत्र चली गईं और राजवंश से गुप्त रखा। कालान्तर में कौटिल्य (चाणक्य) नामक ब्राह्मण की सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य की शिक्षा-दीक्षा पूरी हो सकी।

चन्द्रगुप्त मौर्य के विशाल साम्राज्य का शासन प्रबंध अत्यंत संगठित था। उन्होंने जिस शासन प्रणाली को अपनाया वह भारत के भावी शासकों के लिए आदर्श बन गई। शासन व्यवस्था मुख्यतः तीन भागों में विभक्त थी- केन्द्रीय शासन, प्रान्तीय शासन और स्थानीय शासन। शासन की सर्वोच्च शक्ति सम्राट के हाथ में थी लेकिन प्रजा का अधिक से अधिक कल्याण करने के उद्देश्य से मन्त्रियों, परामर्शदाताओं तथा अन्य पदाधिकारियों की व्यवस्था थी। शासन विभिन्न विभागों द्वारा चलाया जाता था। प्रत्येक विभाग के प्रमुख को ''अमात्य'' कहा जाता था। आन्तरिक शान्ति एवं व्यवस्था के लिए पुलिस का प्रबंध था। पुलिस के सिपाही को ''रक्षिन्'' कहा जाता था।

चन्द्रगुप्त मौर्य अपनी प्रजा की उन्नति के प्रति सदैव प्रयत्नशील रहते थे। उन्होंने यातायात के साधनों की समुचित व्यवस्था की। सड़कांे के किनारे छायादार वृक्ष लगवाये, कुएँ तथा धर्मशालाएँ बनवायीं। सिंचाई हेतु अनेक तालाब और कुएँ खुदवाए। उस समय उनके साम्राज्य की 'सुदर्शन झील' बहुत प्रसिद्ध थी। रोगियों की चिकित्सा के लिए अनेक औषधालय खुले थे। भोजन सामग्री की शुद्धता की जाँच हेतु निरीक्षक थे। शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार हेतु उसने शिक्षालयों की स्थापना की। शिक्षा व्यवस्था का दायित्व सीधे प्रधानमंत्री का था।

यूनानी राजदूत मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक ''इण्डिका'' में चन्द्रगुप्त मौर्य की राजधानी पाटलिपुत्र का बड़ा विशद् वर्णन किया है। इस काल में भारत का बहुमुखी विकास हुआ। कृषि, व्यापार एवं ललित कला आदि के सम्यक् विकास हेतु शासन द्वारा अनेक सुविधाएँ दी जाती थीं। उस समय प्रजा की नैतिकता उच्चकोटि की थी। उस काल की शासन व्यवस्था वस्तुतः एक आदर्श थी। लगभग 24 वर्ष राज्य का सफल संचालन करने के पश्चात् सम्राट चन्द्रगुप्त ने अपने पुत्र बिन्दुसार को शासन का कार्यभार सौंप दिया और स्वयं कुछ वर्ष साधक के रूप में जीवन व्यतीत करने हेतु जैन मुनि भद्रवाहु के साथ चन्द्रगिरि पर्वत पर रहे। यहीं 298 ई0 पू0 में उनका निधन हो गया।

अभ्यास

1. चन्द्रगुप्त मौर्य कौन थे ?
2. मगध की राजधानी का क्या नाम था ?
3. चन्द्रगुप्त मौर्य ने प्रजा के हित के लिए क्या-क्या कार्य किए ?
4. चन्द्रगुप्त मौर्य जीवन के अन्तिम क्षणों में कहाँ और क्यों गए ?
5. चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन प्रणाली क्यों आदर्श बन गई ?